अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

यथार्थ के प्रति सच्ची श्रद्धा है सम्यक् दर्शन: आचार्यश्री महाश्रमण

-सम्यक् दर्शन और मिथ्या दर्शन का आचार्यश्री ने बताया भेद

-आचार्यश्री से प्रेरणा प्राप्त कर श्रद्धालु हो रहे निहाल

-दूर-दूर से श्रद्धालुओं के ससंघ पहुंचने का क्रम निरंतर जारी

04.08.2018 माधावरम, चेन्नई (तमिलनाडु): 'ठाणं' आगम के दूसरे स्थान में दर्शन के दो प्रकार बताए गए हैं-सम्यक् दर्शन और मिथ्या दर्शन। दर्शन के अनेक अर्थ होते हैं। दर्शन का एक अर्थ होता है किसी देव, दिव्यात्मा अथवा गुरु का दर्शन करना। दर्शन का दूसरा अर्थ होता है दिखाना, किसी चीज का प्रदर्शन करना। दर्शन का तीसरा होता है सिद्धांत। जैसे-जैन दर्शन का सिद्धांत, बौद्ध दर्शन का सिद्धांत। दर्शन का चैथा अर्थ होता है आंख। दर्शन का पांचवा अर्थ है सामान्य ग्राही बोध। दर्शन का छठा अर्थ है श्रद्धा, तत्त्व रुचि व आकर्षण।

वर्तमान में दर्शन का अर्थ श्रद्धा और रुचि व आकर्षण के लिए किया गया है। वस्तु सत्य के प्रति यथार्थ श्रद्धा सम्यक् दर्शन तथा वस्तु सत्य के प्रति अयथार्थ श्रद्धा मिथ्या दर्शन हो जाता है। सम्यक् दर्शन बड़ा दर्शन होता है। धरती पर तीन रत्न बताए गए हैं-पानी, अन्न और ज्ञानवाणी। सम्यत्व का विशेष स्थान बताया गया है। बिना सम्यत्व के कि आचार के अनुपालन का भी उतना फल नहीं मिल पाता है, जितना सम्यत्व के साथ आचार पालन का प्राप्त हो सकता है। अपेक्षित फल की प्रप्ति के सम्यत्व होना आवश्यक होता है। आदमी को अपना सम्यक् दर्शन ठीक रखने का प्रयास करना चाहिए। सत्य के प्रति श्रद्धा और विश्वास रहे तो आदमी का सम्यक् दर्शन अच्छा हो सकता है। सम्यत्व के साथ चारित्र का अनुपालन हो तो उसका सवाया लाभ प्राप्त हो सकता है। इसलिए आदमी को सत्य को सत्य मानकर उसके प्रति सच्ची श्रद्धा रखने का प्रयास करें तो अच्छा हो सकता है। देव, गुरु और धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा, भक्ति और समर्पण का भाव हो तो सम्यक् दर्शन पुष्ट हो सकता है। आदमी को अपने सम्यक् दर्शन को पुष्ट बनाने का प्रयास करना चाहिए। 'ठाणं' आगमाधारित ज्ञानगंगा को माधावरम स्थित चतुर्मास प्रवास स्थल परिसर में बने 'महाश्रमण समवसरण' से जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने श्रीमुख से प्रवाहित को उपस्थित श्रद्धालु इस ज्ञानगंगा में गोते लगाए तथा अपनी क्षमता अनुसार उसे संरक्षित करने का प्रयास किया। इसके उपरान्त आचार्यश्री ने चेन्नईवासियों पर और कृपा बरसाते हुए उन्हें 'मुनि मुनिपत' का बखान भी सुनाया। अपने आराध्य की महती अनुकंपा को प्राप्त कर मानों श्रद्धालु निहाल हो उठे।

माधावरम् में आचार्यश्री के विराजमान होने के बाद से तीर्थस्थल के रूप में परिवर्तित इस क्षेत्र में मानों पूरे दिन जनता का पारावार उमड़ता रहता है। चतुर्मास में अपने आराध्य के निकट दर्शन और सेवा का लाभ लेने के लिए देश भर के विभिन्न हिस्सों से लोगों का ससंघ पहुंचने का क्रम निरंतर जारी है। सुबह हो शाम, दोपहर हो रात श्रद्धालुओं के पहुंचने का क्रम लगा रहता है। इस कारण चतुर्मास प्रवास स्थल ही नहीं पूरा माधावरम गुलजार बना हुआ है। रेलवे स्टेशन हो अथवा एयरपोर्ट, चाहे बस स्टैण्ड प्रत्येक जगह से लोग चलते हैं और उन सभी लोगों का एक ही ठिकाना होता है अपने आराध्य की मंगल सन्निधि में पहुंचना। श्रद्धालु जब आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीष पाते हैं, उनके आंतरिक तृप्ति उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।